Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

जवाहर नवोदय विद्यालय एवं अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

Ashok Kumar Sharma[1]* Dr. Abhishek Kulshrestha[2]

[1] Research Scholar, Singhania University, Churu, Rajasthan

[2] Lecturer, Babu Shivnath Agrawal College, Mathura, Uttar Pradesh

***सारांश** - मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसकी सोच एवं क्रियाएँ उस समाज एवं वातावरण पर निर्भर करती है जिसमें वह रहता है उसी वातावरण के अनुरूप उसके लक्ष्य (आकांक्षा), प्रयास एवं सफलताएं निर्भर करती है। बचपन में जब तक व्यक्ति अपनी योग्यता, रूचियों और मूल्यों को नहीं पहचानता है तब तक उसकी आकाक्षाएं, मुख्यतः वातावरण पर निर्भर करती है। वातावरण सम्बन्धी कारकों में अभिभावकों की महत्वाकांक्षाएं, मित्र समूह, संस्कृति प्रतिस्पर्धा आदि मुख्य हैं। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है व्यक्तिगत कारक जैसे - गत अनुभव, उसका व्यक्तित्व, रूचियाँ, इच्छाएँ, लिंग और सामाजिक आर्थिक स्तर भी आकांक्षा के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। हालांकि यह व्यक्तिगत कारक भी वातावरण द्वारा प्रभावित होते है। इस प्रकार बालक के आकांक्षा स्तर पर विद्यालय के वातावरण का प्रभाव पड़ना सम्भावित है।*

----------X----------

प्रस्तावना:-

शिक्षा ज्ञानरूपी प्रकाश का स्रोत है। शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शक है। शिक्षा द्वारा हमारे संशयों का उन्मूलन एवं कठिनाइयों का निवारण होता है तथा विश्व को समझने की क्षमता प्राप्त होती है।

व्यक्तिगत दृष्टिकोण को समाने रखते हुये नन महोदय कहते है कि "विद्यालय को प्राथमिक विचार से एक ऐसे सीखने का स्थान नहीं समझना चाहिये, जहाँ कुछ ज्ञान सीखा जाता है, परन्तु एक ऐसा स्थान समझना चाहिये जहाँ युवक कुछ विशिष्ट प्रकार की क्रियाओं में अनुशासिकत किये जाते है।, जो इस विस्तृत संसार में सबसे महान् एवं सबसे अधिक स्थायी महत्व की है।"

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार भारत सरकार ने जवाहर नवोदय विद्यालय प्रारम्भ किये थे, जिनका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों और समाज के कमजोर वर्गो के प्रतिभावान छात्रों के सम्पूर्ण विकास के लिये उत्तम आधुनिक शिक्षा उपलब्ध करना, प्रवास (माइग्रेशन) की नीति के जरिये छात्रों में राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना तथा जिला स्तर पर गति निर्धारित संस्थायें स्थापित करना जो आदर्श होने के साथ-साथ उत्कृष्टता को बढावा देने के संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य कर। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में शैक्षिक विषमताओं को दूर करने तथा शिक्षा के समान अवसरों से वंचित बालकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये, उन्हें शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने पर बल दिया गया है। इसी उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गति संवर्धक विद्यालय (पेस-सेटिंग स्कूल) स्थापित करने का संकल्प किया गया है। इसी क्रम में जवाहर नवोदय विद्यालय की स्थापना की गयी है। इन विद्यालयों में छात्रों के सम्पूर्ण विकास को ध्यान में रखते हुये उत्तम, आधुनिक एवं गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध कराना, प्रवास नीति के जरिये राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना एवं लोकतन्त्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, अवसर की समानता आदि राष्ट्रीय उद्देश्यों की उपयुक्त शिक्षा व्यवस्था द्वारा पूर्ति करने का प्रयास किया जाता है। इन विद्यालयों का अपना विशिष्ट संगठनात्मक स्वरूप है। इनका संचालन केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थापित जवाहर नवोदय विद्यालय समिति करती है। नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के आवास, भोजन कपड़ा, दैनिक उपयोगी वस्तुओं पर आने वाले खर्च एवं घर आने जाने के किराये (वर्ष में दो बार) पर होने वाले व्यय को भी सरकार ही वहन करती है। इन विद्यालयों में नवाचार अपनाने की और नवीन प्रयोग करने की छूट दी गयी है। इन विद्यालयों को अन्य विद्यालयों के लिये आदर्श रूप में माना गया है।

www.ignited.in

यद्यपि अनुदानित विद्यालयों में भी नवोदय विद्यालयों के अनुरूप ही पाठ्यक्रम की व्यवस्था है, परन्तु शिक्षा प्रदान करने के स्तर व माध्यम् में कुछ परिवर्तन है। राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र-छात्रायें अपने माता-पिता के संरक्षण रहते हुये शिक्षा ग्रहण करते हैं जबकि नवोदय विद्यालय के विद्यार्थी माता-पिता से दूर अध्यापक/अध्यापिकाओं के संरक्षण में उन्हीं के साथ रहते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व:-

अनुदानित विद्यालयों और जवाहर नवोदय विद्यालयों की विभिन्न दृष्टि से कम परन्तु व्यवहार में अधिक है। अनुदानित विद्यालयों में जवाहर नवोदय विद्यालयों की तुलना में विभिन्न सुविधाओं का अभाव पाया जाता है। कई अनुदानित विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं जैसे-पर्याप्त भवन व्यवस्था, अध्यापकों एवं छात्रों के बैठने हेतु पर्याप्त फर्नीचर, पेयजल, शौचालय व्यवस्था, सुसज्जित प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय का अभाव देखने को मिलता है जबकि नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा, आवास, भोजन, वस्त्र एवं शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने के अतिरिक्त उनके लिये उचित प्रकार से निर्मित विद्यालय और छात्रावास भवन, फर्नीचार, खेलकूद मैदान, खेलकूद सामग्री, सभागार, सुसज्जित प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय तथा कम्प्यूटर कक्ष आदि उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त चिकित्सा सुविधाये, शुद्ध पेयजल, स्वच्छ शौचालय आदि की भी उचित व्यवस्था होती है।

जवाहर नवोदय विद्यालयः-

जवाहर नवोदय विद्यालय का तात्पर्य है जिनका नवीन उदय हुआ हो। ये वे विद्यालय है जिनकी स्थापना कमजोर वर्ग के प्रतिभाशाली बालकों के लिये हुयी है और उनका लक्ष्य उन सुप्त एवं अज्ञात प्रतिभाओं को खोजकर विकसित करना है जो कि अभावों के कारण समय के साथ आगे न आकर विलुप्त हो जाती है। ये उन क्षेत्रों के लिये है जो कि आर्थिक रूप से पिछड़े हुये है और जहाँ तक अभी माध्यमिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी नहीं हुआ है। इन प्रतिभाओं को दिशा निर्देशन और उन्हें गति प्रदान करने के लिये इन विद्यालयों की स्थापना की गयी है अन्तः इन्हें 'गति निर्धारण' विद्यालयों के नाम से पुकारा जाता है। इन विद्यालयों की संकल्पना राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) की देन है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान करने हेतु नवम्बर, सन् 1983 में योजना कार्यान्वयन नाम से अभिलेख प्रकाशित किया गया जिसके तृतीय खण्ड में नवोदय विद्यालय के रूप में संकल्पना की गयी और उनको व्यावहारिक रूप प्रदान किया।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में ग्रामीण क्षेत्र के विशेष प्रतिभा या अभिरूचि वाले बच्चों को उनकी आर्थिक स्थिति पर ध्यान दिये बिना अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराकर उन्हें आगे बढ़ने के अवसर दिये जाने हेतु इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार देश के विभिन्न भागों में निर्धारित प्रारूप पर अति निर्धारक (पेस सेटर) स्कूलों की स्थापना का प्रावधान किया गया, जिन्हें जवाहर नवोदय विद्यालय की संज्ञा दी गयी। इन विद्यालयों का प्रमुख लक्ष्य सामाजिक न्याय के साथ ग्रामीण प्रतिभाओं को शैक्षिक अवसर प्रदान करते हुये राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना रखा गया।

अनुदानित विद्यालय:-

अनुदानित विद्यालय से तात्पर्य उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त विद्यालय से है।

विद्यालय संगठन:-

औपचारिक शिक्षा प्रदान करने का साधन विद्यालय के संगठन से तात्पर्य है, बालकों के सर्वांगीण विकास से सम्बन्धित सभी उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की समुचित व्यवस्था एवं नये सामंजस्य स्थापित करना तथा आवश्यक साधनों की प्राप्ति हेतु प्रयास करना।

आकांक्षा स्तर:-

आकांक्षा व्यक्ति के द्वारा निर्धारित किया गया वह विशिष्ट लक्ष्य है जिसकी प्राप्ति के लिये वह प्रयत्न करता है यह निर्धारण व्यक्ति योग्यता एवं क्षमता तथा उसकी पूर्व सफलता एवं असफलता के द्वारा प्रभावित होता है।

मानविकी परिभाषिक कोश:- एक स्तर, जहाँ में पहुँचने के लिये कोई व्यक्ति आकांक्षा रखता है। वह स्वशक्ति का ऐसा प्रमाप अथवा स्तर है जिसके अनुसार कोई व्यक्ति सफलता अथवा असफलता का अनुभव करता है। इस स्वशक्ति का प्रत्येक व्यक्ति एवं अनुमान रखता है, और वही उसकी स्वशक्ति का माप स्तर है।

हम स्व को दो प्रकार से देखते है।

1. एक तो हम स्वशक्ति को किसी अंश तक वास्तविकता के दृष्टिकोण से देखते हैं। यह 'अहंस्तर' है। इस स्तर का निर्माण पिछले वास्तविक तथ्य पर आधारित है।

www.ignited.in

2. दूसरे स्वशक्ति को पूर्ण स्पष्ट या कम स्पष्ट रूप से एक ऐसी वस्तु समझना है, जिसे अनुभव अभी करना है, यह आकांक्षा स्तर है दोनों में थोड़ा अन्तर है। जिन लोगों का आकांक्षा स्तर, अहं स्तर से थोड़ा ही आगे रहता है, वे लोग किसी केाम में सफल रहते है तथा जिनका आकांक्षा स्तर उनके अहं स्तर से बहुत आगे रहता है, वे साधारणतः अपने कार्य में असफल रहते हैं।''

शोध अध्ययन के उद्देश्य:-

किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसकों करने का कारण निर्धारण करना ही उस कार्य का उद्देश्य कहलाता है। बिना उद्देश्यों को निर्धारित किये कार्य को समुचित या सुचारू रूप से आगे बढ़ाना असम्भव हो जाता है। प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

1. जवाहर नवोदय विद्यालयों तथा अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. जवाहर नवोदय विद्यालयों तथा अनुदानित विद्यालयों की विभिन्न संगठनात्मक वातावरण में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें:-

अध्ययन विषय के चयन के बाद अनुसन्धान कार्य को आगे बढ़ाने के लिये किसी न किसी आधार की आवश्यकता होती है। यह आधार किसी कल्पना के रूप में होता है।

1. विद्यालयों की संगठनात्मक भिन्नता विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव डालती है।

2. विद्यालयों की संगठनात्मक भिन्नता विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर प्रभाव डालती है।

शोध अध्ययन की परिसीमाऐं -

शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन को निम्नानुसार परिसीमित किया है-

1. प्रस्तुत अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश के केवल पाँच जिलों के जवाहर नवोदय विद्यालय एवं उन्हीं क्षेत्रों के पाँच अनुदानित विद्यालयों को तुलनात्मक अध्ययन हेतु चयन किया है।

2. न्यादर्श में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को चुना है।

अध्ययन के चर:-

प्रस्तावित अध्ययन में चर निम्न प्रकार होंगे-

- स्वतन्त्र चर विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण
- नियन्त्रित चर विद्यालय के प्रकार जवाहर नवोदय विद्यालय एवं अनुदानित विद्यालय

शोध हेतु न्यादर्श:-

उत्तर प्रदेश के लगभग सभी में जिलों जवाहर नवोदय विद्यालय स्थापित हो चुके हैं शोधकर्ता द्वारा सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना सम्भव नहीं था इसीलिये उत्तर प्रदेश के मथुरा वह हाथरस जिलों के जवाहर नवोदय विद्यालय एवं मथुरा जिले के दो अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों को सर्वेक्षण विधि द्वारा 464 विद्यार्थियों (11 एवं 12) न्यादर्श के रूप में चुना गया।

उत्तर प्रदेश के एक जिला मथुरा व हाथरस के जवाहर नवोदय विद्यालय एवं मथुरा क्षेत्र के दो अनुदानित विद्यालयों के सगंठनात्मक वातावरण की पहचान हेतु 10-10 अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया। विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का किशोर पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने हेतु कक्षा 11 व 12 (उच्च माध्यमिक स्तर) के 464 विद्यार्थियों को चुना। जवाहर नवोदय विद्यालय के 230 विद्यार्थियों को एवं मथुरा के अनुदानित विद्यालयों के 234 विद्यार्थियों के 234 विद्यार्थियों से तथ्य संकलन किया।

तालिका संख्या - 4.1

जवाहर नवोदय विद्यालयों एवं अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर की तुलना

कम सं.		जवाहर नवोदय विद्यालय N_1=230		अनुदानित विद्यालय N_2=234		टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
		मध्यमान	प्रमाप विचलन	मध्यमान	प्रमाप विचलन		
1.	लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक (G.D.S.)	1.11	2.58	2.84	2.78	6.95	**
2.	लब्धि भिन्नता प्राप्तांक (A.D.S.)	0.57	2.38	2.15	2.83	6.50	**
3.	लक्ष्य तक पहुँचने की संख्या (N.T.R.)	5.44	2.23	3.68	2.49	8.02	**

Df=N1+N2-2+230+234_2+462

* 0.05 स्तर पर सार्थक (df=462 के लिये .05 स्तर पर टी का मूल्य. 1.97)

** 0.01 स्तर पर सार्थक (df=462 के लिये .01 स्तर पर टी का मूल्य. 2.59)

तालिका सं. - 4.1 में जवाहर नवोदय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समग्र न्यादर्श (N=234) के लिये लक्ष्य

www.ignited.in

भिन्नता प्राप्तांक (A.D.S.) एवं लक्ष्य तक पहुँचने की संख्या (N.T.R.) के मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं इनके सार्थक अन्तर की जाँच के लिये टी-मूल्य को दर्शाया गया है।

लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक एवं लब्धि भिन्नता प्राप्तांक के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर औसत है परन्तु उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांकों का मध्यमान जवाहर नवोदय विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया है तथा टी-परीक्षण के आधार पर इनमें त्रुटि के 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया है। इससे यह प्रदर्शित होता है कि ये विद्यार्थी अपने सामथ्र्य की तुलना में अपना लक्ष्य उच्च रखते हैं अर्थात् इनका आकांक्षा-स्तर तुलनात्मक रूप से अधिक है।

तथ्य संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण:-

प्रस्तुत शोध हेतु शोधकर्ता के द्वारा निम्नलिखित प्रमापीकृत उपकरण प्रयोग में लिये गये हैं।

1. डॉ. एस. डी. कपूर द्वारा निर्मित परीक्षण - 16 पी. एफ. परीक्षण

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. गुडे एवं हेट (1962). ''मेथड्स इन रिसर्च (मेकग्राहिल बुक कम्पनी) 1962 पृ.सं. 56।
2. हरलॉक ई. बी. : ''चाइल्ड डेवेलपमेन्ट''
3. लैडेल: ''द डिक्शनरी ऑफ़ साइकोलोजीकल टर्म्स'', पृ. सं. 19
4. गैरेट, एच.ई.: ''जनरलसाइकोलोजी'' पृ. सं. 500
5. अचार्लु, के. ए. (1990). ''कन्सेप्ट ऑफ़ द मॉडल स्कूल (नवोदय) गाँधी विज्ञान 1 (2) अक्टूबर 1990 पृ.सं. 7-15
6. धर्मराज, वी विलियम;, पूनम बाला त्यागराजन एवं आनन्दन (2000). ''द टीचर इफेक्टीवनेस इन टर्मस ऑफ़ आर्गेनाइजेशन क्लाइमेट'' न्यू फ्रन्टीयर्स एजूकेशन वोल्यूम 30 (2)
7. जना, आर. (1989). लाइफइटनवोदय विद्यालय एजूकेशनलरिव्यू 95 (1989) सितम्बर पृ. सं. 147-149
8. पण्डी बी.एन. (1992). ''स्टडीहेबिट्स ऑफ़ डिस्एडवाटेड एण्डनोन डिस्एवांटेज्ड एडोलेन्सेस इनरिलेशन टू सेक्स एण्ड एकेडेमिक परफोरमैन्स'' इण्डियन जरनल ऑफ़ साइक्रोमेट्री एण्ड एजूकेशन, 23 (2) पृ. सं. 91-96
9. गार्डनर और मर्फी: ''एन इन्ट्रोडक्शन टू साइकोलोजी'', पृ. सं. 501
10. सी. सार्जेन्ट (1967). ''एन एनालिसिस ऑफ़ प्रिन्सीपल एण्ड स्टाफ पर सेप्शन ऑफ़ हाईस्कूल
11. आनन्द एस.पी. (1992). ''आर्गनाइजेशन क्लाइमेटइन स्कूल्स'' -जरनल इण्डियन एजूकेशन 18 (4) नवम्बर 1992 पृ. सं. 46-53

Corresponding Author

Ashok Kumar Sharma*

Research Scholar, Singhania University, Churu, Rajasthan

ashok.harsh50@gmail.com

www.ignited.in